Dr Meena Devi
Dept of — psy
Class — D II / III

Date 7.4.2020

(1) Ques → What is obsession compulsion psychoneurosis? Explain the symptoms and etiology of obsession compulsion neurosis? बाध्यता मनःस्नायुविकृति क्या है? बाध्यता मनःस्नायुविकृति के कारण एवं लक्षण का वर्णन करें?

Ans → बाध्यता एक प्रकार की सनक है। इसमें व्यक्ति यहीं बिना मतलब का कुछ करता है। अनिवार्यता इसमें स्वभावतः जुड़ा होता है। दोनों का सम्बन्ध इतना अधिक है कि इसे अलग नहीं किया जा सकता। कभी एक रूप की प्रधानता रहती है और कभी दूसरे रूप की। दोनों की परिभाषाएँ निम्नलिखित ढंग से दे सकती हैं।

किश्वर ने सनक की परिभाषा इस प्रकार दी है "सनक एक ऐसे निश्चित स्वरूप की मानसिक क्रिया है जिसे व्यक्ति अतार्किक समझता है लेकिन उस पर उसका कुछ भी नियंत्रण नहीं रहता है।"

"सनक वह विचार या आवेग है जो रोगी की इच्छा के प्रतिकूल रहता उसके मन में बार-2 आता है।"

"An obsession is a mental activity of a fairly specific nature which the individual recognizes to be irrational over which he has little or no control." बाध्यता एक ऐसी निश्चित स्वरूप की बार-2 होने वाली बाध्य क्रिया है जिसे व्यक्ति उस परिस्थिति में जिससे यह क्रिया होती है, अतार्किक तथा असंगत समझता है, लेकिन उसपर उसका कुछ भी नियंत्रण नहीं रहता है। सनक में विचार की प्रधानता रहती है और अनिवार्यता में क्रिया की।

कभी-2 मनकी विचार और बाध्य क्रियाएँ दोनों एक ही व्यक्ति में पायी जाती है। इसलिए इसे हम बाध्यता मनः स्नायु विकृति के नाम से पुकारते हैं। कभी मनकी विचार की प्रधानता रहती है तो यह रोग जड़ ही संज्ञान हो जाता है। परन्तु बाध्य क्रिया की प्रधानता रहने पर ऐसी बात नहीं होती है।

बाध्यता मनःस्नायु विकृति — एक प्रकार का मानसिक रोग है जिसमें रोगी किसी प्रकार के आवेग तथा क्रिया को इच्छा के प्रतिकूल बार-2 करने के लिए बाध्य होता है, साफ हाथों को बार-2 धोना, बार-2 ताले को देखना, संख्या को गिनना।

बाध्यता एवं अनिवार्यता हम कह सकते हैं कि एक ही मनोदशा के दो पहलू हैं। एक का स्वरूप ज्ञानात्मक और दूसरे का क्रियात्मक होता है। उसके अनुकूल मनोबाध्यता में रोगी का मन अनवांछित विचारों से भरा रहता है। इसमें उसकी रुचि नहीं होती है किन्तु उससे वह विमुख नहीं हो सकता।

(1) Que पैवलव द्वारा प्रतिपादित सीखने के अनुबन्धन सिद्धान्त की विवेचना करें?

Explane Pavlov's Conditioning theory of learning?

Ans → पावलव नामक रुसी मनोवैज्ञानिक ने अपने प्रयोग के आधार पर इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसे अनुबन्धन सिद्धान्त की संज्ञा दी जाती है। इस सिद्धान्त के अनुसार जब कोई स्वाभाविक उद्दीपन के साथ तटस्थ उद्दीपन बार-2 आते हैं तो व्यक्ति इन दोनों में एक विशेष प्रकार का सम्बन्ध स्थापित कर लेता है जिसके परिणाम स्वरूप वह तटस्थ उद्दीपन के प्रति भी वैसी ही अनुक्रिया करता है जैसा कि वह स्वाभाविक उद्दीपन के प्रति करता है। इस प्रक्रिया को ही Conditioning की संज्ञा दी जाती है।

इस बातों को एक उदाहरण द्वारा इस प्रकार समझाया जा सकता है — किसी भूखे व्यक्ति के सामने भोजन रखा जाता है स्वाभाविक उसके मुँह में भोजन देखकर लार आने की अनुक्रिया होगी। यदि भोजन रखने के चन्द सेकेन्ड पहले एक घण्टी बजायी जाती है और इस प्रक्रिया को बार-2 दोहरायी जाती है तो सम्भव है कि कुछ प्रयास के बाद व्यक्ति को मात्र घंटी की आवाज सुनते ही मुँह में लार आने लगे यदि ऐसा होता है तो यह कहा जायेगा कि वह

Date 8-11-2021

Expt. No. ______ Page No. 2

तरह का सीखना अनुबंधन द्वारा सम्पन्न हुआ। इस प्रयोग में भोजन UCS था, लेकिन बाद में UCR था। घंटी CS था तथा अनुबंधन के बाद घंटी के प्रति किया गया लार स्राव CR का उदाहरण है। शास्त्रीय या गत

अनुबंधित अनुक्रिया का सिद्धान्त (Conditioned response theory) कई प्रयोगों पर आधारित है। जिनमें निम्नलिखित दो मुख्य रूप से प्रसिद्ध हैं।

(क) पैवलव द्वारा कुत्ते पर किया गया प्रयोग-

(ख) वाटसन तथा रेनर द्वारा किया गया प्रयोग-

(क) Experiment done on dog by pavlov →

पैवलव ने कुत्ते को एक ऐसे कमरे में रखा गया जिसमें बाहर से किसी प्रकार आवाज नहीं पहुँच सकती थी। जब भी कुत्ते के सामने भोजन लाया जाता था तो उसके मुँह में लार का स्राव होने लगता था। कुछ प्रयोगों के बाद भोजन प्रस्तुत करने के चन्द सेकेण्ड पहले एक घंटी बजायी जाने लगी। इस प्रक्रिया को कई प्रयासों तक दोहराने के फलस्वरूप घंटी की आवाज सुनने से बिना भोजन देखे ही कुत्ते के मुँह में लार आना प्रारम्भ हो गया।

इस तरह कुत्ते ने घंटी की आवाज पर लार स्राव करना सीख लिया जिसे अनुबंधन की संज्ञा दी।

Teacher's Signature